ॐ नमः टेऊँरामाय　　ॐ नमः सर्वानन्दाय

श्री सत्नाम साक्षी

साक्षी दर्शन



रचयिता

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

टीकाकार

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज



श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य
श्री श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज



सत् श्री पूज्य पाद श्री श्री १०८ सद्गुरु
स्वामी सर्वानन्द जी महाराज प्रेम प्रकाशी

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

- भूमिका -

श्लोक–नीतिज्ञा निर्यातज्ञा वेदज्ञा अपि भवन्ति शास्त्रज्ञाः।
ब्रह्मज्ञा अपि लभ्याः, स्वाज्ञानज्ञानिनो विरलाः ।।

परमात्मा के बनाए हुए संसार में क्या नहीं मिलता, सब कुछ मिल जाता है। फिर भी संसार में बहुत कुछ ऐसी वस्तुएँ है जो प्राप्त करने, पहचानने, देखने और सुनने को दुर्लभ है। सबसे अत्यन्त दुर्लभ है अपने अज्ञान को जानना और मानना। नीतियों को, भूत, भविष्य, वर्तमान को, वेदों, पुराणों शास्त्रों आदि समस्त विद्याओं, भाषाओं और ब्रह्म को जानने वाले भी मिल जायेंगे, परन्तु अपने अज्ञान को जानने और मानने वाले बहुत ही कम; न के बराबर मिलेंगे। यद्यपि प्रत्येक मनुष्य अपने अज्ञान को अच्छी तरह से जानता है। फिर भी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध आदि विषयों और विकारों के वश में पड़कर उसे ज्ञान में बदलने या छिपाने का पूरा प्रयास करता है। यह मनुष्य की एक मानसिक दुर्बलता है। यदि इसका इलाज तुरन्त न किया जाये तो आगे चल कर यह एक भयंकर रोग का रूप धारण कर लेती है, और अन्त में सर्व नाश का कारण बन जाती है।

यद्यपि साक्षी (अन्तरात्मा) हर मनुष्य को समय समय पर उसे उसका अज्ञान (भूल) बताकर सावधान करता रहता है, फिर भी मनुष्य कंचन कामिनी और कीर्ति के नशे में इतना तो उन्मत्त हो जाता है जो साक्षी की दी गयी चेतावनी का जरा सा भी ध्यान नहीं रखता। इस उद्दण्डता के कारण जाति, समाज और देश को भारी आपत्तियों का सामना करना पड़ जाता है। मन में अच्छे अथवा बुरे संकलप उत्पन्न होते ही साक्षी उन्हें जान लेता

है। करने या न करने की राय दे देता है, प्राप्त होने वाले फल को
देता है। फिर भी अगर साक्षी की अवहेलना की जाये तो शा
मानसिक असहनीय पीड़ाएँ भोगनी ही पड़ेंगी। जिस किसी ने
अज्ञान को समझा और स्वीकार किया, उसका जीवन सफल है। उ
दुर्लभ मुक्ति मिल सकती है। ऐसा मनीषी लोगों का निश्चित मत है

इस "साक्षी दर्शन" पुस्तक की विशेषता यह है कि मनुष्य
अज्ञान बताकर उसे सब ओर से बचाने में सहायता करता है। य
दर्शन नामक पुस्तक जो आप सज्जनों के हाथों में है, एक ऐतिहासि
है। इसमें सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के दिव्य सन्देशों
कराया गया है। जन साधारण को अधिक से अधिक ज्ञान की उप
इस उद्देश्य से अनुभव सिद्ध स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने विस्तृ
सहित सरल भाषा में इसको लिखा है। विद्वानों द्वारा वन्दित
सर्वानन्दजी महाराज ने सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के समस्
का पूरा पालन किया, उनकी आंतरिक इच्छाओं की पूर्ति की।
निर्मान और निष्पक्ष रहकर सेवा कार्यों द्वारा भारतीय प्रेम प्रका
और सिंधी समाज को कीर्ति के शिखर पर पहुंचाया।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने सिंधी समाज और देश
के लिये अपना सब कुछ अर्पण कर दिया, भारत के शहर शहर में प्रे
आश्रमों और प्रेम प्रकाशी मण्डलियों की स्थापना की, और विदेशों में
मनीला (फिलीपाईन), सींगापुर में "स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाशी
के नाम पर मन्दिरों की स्थापना की, और लासपालमास (स्पेन) में
साक्षी मन्दिर की स्थापना की। भारत में चाहे विदेश सभी जगह
सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के आज्ञाओं और नियमों का पू
किया जाता है। अतिथि, साधु-सन्त का बहुत अच्छा स्वागत-सत्क
जाता है।

स्वामी जी ने सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के दिव्य स
पूर्व से पश्चिम तक विश्वभर की यात्रा कर घर घर पहुंचाया, स्वा

समस्त कार्य और यादें अविस्मरणीय और अनुकरणीय हैं। जरा अतीत में मन को ले जायेगे तो स्वामीजी के समस्त कार्यों को वर्तमान की तरह देखेंगे। सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के लाड़ले शिष्य परमहंस स्वामी गुरुमुख-दासजी महाराज के द्वारा विरचित "गुरुमुख गीता" भी साथ में है। उन्हीं करुणावरुणालय गुरुदेव की कृपा हम सब पर सदैव बनी रहे।

उन्हें बार-बार प्रणाम।

कृतज्ञ

प्रेम प्रकाशी

हरिदास

याचना

हे ! पतित पावन अंतर्यामी गुरु देव ।
आप दया के सागर हैं,
हमें दया का दान दो ।
आप निर्भय हैं,
हमें अभय का दान दो ।
आप निरामय हैं,
हमें नीरोगता का दान दो ।
आप विघ्न विनाशक हैं,
हमारे विघ्न नाश करो ।
आप निर्मल हैं,
हमारे मन शुद्ध करो ।
असाध्य एवं भंयकर रोग किसी को न हो ।
मेरी शुभ भावनाएं सभी पूर्ण हों ।
मेरी अशुभ भावनाएं कभी पूर्ण न हों ।

"सर्वानन्द"

ॐनमः टेऊँरामाय ॐ ॐ नमः सर्वानन्दाय

श्री सत्नाम साक्षी

।। साक्षी दर्शन ।।

(दोहा)

अद्भुत इक इतिहास है, सुनिये देकर ध्यान ।
जांके श्रवण मनन से, साक्षी का हो ज्ञान ।।१।।

संसार चक्र कब से चला, और कब तक चलेगा, कुछ मालूम नहीं । इस संसार मंच पर कई लोग आये और अपना-अपना नाटक दिखाकर चले गये । कई अभी आ रहे हैं । कई भविष्य में आयेंगे, और आते रहेंगे । यह सृष्टि चक्र चलता रहता है, और चलता रहेगा । कभी बन्द होने वाला नहीं है । प्रत्येक मनुष्य इस संसार मंच पर अपनी अपनी स्मृतियां छोड़ जाता है । कालातंर में (समय पाकर) वे स्मृतियाँ ही आने वाली नई पीढ़ियों के लिये इतिहास बन जाती हैं । वे इतिहास ही देश, जाति और समाज के उत्थान एवं पतन के कारण बताये गये हैं ।

इतिहास एवं पुराणों का अध्ययन और अनुशीलन (पढ़ी गयी विषय का बार बार विचार करना) करना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्त्तव्य है । जो लोग पुराणों एवं इतिहासों को न जानते हैं, न जानने का प्रयास ही करते हैं, वे गेंद की तरह कभी ऊपर, कभी नीचे, कभी दाएं, कभी बाएं, धक्के खाते रहते हैं । पुराने इतिहास आज के मानव को अजीब से लगते हैं । आज के इतिहास भी भविष्य के मानव को अजीब लगेंगे । इतिहासों में महाभारत सबसे बड़ा इतिहास है । इसे पांचवां वेद भी कहते हैं । महाभारत के विषय में जन साधारण में यह भय एवं भ्रम डाला गया है कि जो कोई भी महाभारत पढ़ेगा, सुनेगा या घर में भी रखेगा तो उसके घर में झगड़े पैदा हो जायेंगे और सारा घर बरबाद हो जायेगा । जिस महाभारत के विषय में हम सुन रहे हैं, वह महाभारत भगवान राम के समय में था ही नहीं । फिर राम के घर में

इतना बड़ा भारी झगड़ा पैदा हो गया जो भगवान राम को भाई एव
सीता सहित घर छोड़कर वन को जाना पड़ा, राजा दशरथ जी को अपने
त्यागने पड़े । कौरव एव पाण्डव आपस में भाई बन्धु ही थे, वहां भी
पैदा हो गया, जिस झगड़े ने महाभारी युद्ध का रूप धारण कर लिया
हैं उस युद्ध में डेढ़ अरब से भी अधिक वीर सैनिक मारे गये थे । द्वारक
भगवान श्रीकृष्णजी के सगे सम्बन्धी छप्पन करोड़ यादव उस युद्ध यज्ञ में
हो गये थे । महाभारत की रचना तो बाद में महर्षि वेद व्यास जी ने व

पुराने समय को छोड़कर जो समय चल रहा है हम उसे देख
विचारें । आज घर घर में लड़ाई और झगड़े क्यों हो रहे हैं ? जब
घर में महाभारत नहीं है । यदि महाभारत ही झगड़ों की जड़ होती त
घर में झगड़े नही होते । साधारण मनुष्य भी थोड़ा विचार करने से स
समझ सकता है । मानना पड़ेगा कि महाभारत झगड़ों की जड़ नहीं प
शान्ति की जड़ है । केवल स्वार्थी एवं अविवेकी लोगों ने अपना मतलब
करने के लिये यह भय एवं भ्रम का जाल बिछा रखा है । सच तो यह
वेद, पुराण, इतिहास, महाभारत, गीता और रामायण आदि आर्ष
(ऋषियों द्वारा लिखे गये) सचमुच ज्ञान विज्ञान के भण्डार हैं । जैसे कि
का कर्त्तव्य क्या है ? राजा का कर्त्तव्य क्या है ? नारी का कर्त्तव्य क्या
गुरु का कर्त्तव्य क्या है ? शिष्य का कत्तव्य क्या है ? नेता का कर्त्तव्य क्या
मुखिया एवं पंचों का कर्त्तव्य क्या है ? गुरु किस को कहते हैं ? गुरु कब
चाहिये और कौन सा करना चाहिये ? दान कब करना चाहिये ? दान
को देना या लेना चाहिये ? सच्ची मेहनत के पैसों से दान करना च
या मुफ्त के पैसों से या दान में मिले हुए धन आदि पदार्थों का दान
चाहिये ? कर्म उपासना एवं ज्ञान तीनों अलग अलग हैं या एक हैं ? मैं
हूं ? संसार क्या है ? ब्रह्म क्या है ? माता-पिता, भाई-बहिन, पति-
आदि सारे परिवार का एक दूसरे के साथ क्या कर्त्तव्य है ? मूर्ति पूजा
चाहिये या नहीं ? मांस, मछली अंडे खाने चाहिये या नहीं ? तीर्थ करने च
या नहीं ? गंगाजी में अस्थियां डालनी चाहिये या नहीं ? कहने का मतल
सब प्रकार के ज्ञान सब नीतियां, शास्त्रों से निकलती है । जो कुछ ज्ञा

विकास हो चुका है या हो रहा है वह सब अभी तक तो न के बराबर है, इससे बहुत कुछ भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है। भोजन खाना, कपड़े पहनना और पानी पीना भी इतना जरूरी नहीं है. जितना कि इतिहासों एवं पुराणों का पढ़ना। क्योंकि इतिहास एवं पुराण ये दो ज्ञान चक्षु बताये गये हैं। दो दो आंखें, प्रायः सभी मनुष्यों को होती हैं, पर पशु एवं पक्षियों को भी होती हैं। सर्प बिच्छू को भी दो-दो आंखें होती है। जिसको एक आंख हो उसे काना कहते हैं, जिसको दोनों आंखें न हों उसे सूरदास कहते हैं। जिसको ज्ञान चक्षु हो उसे ज्ञानी कहते हैं। सूरदास फिर भी अपनी लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। परन्तु ज्ञान चक्षु हीन मनुष्य अपने लक्ष्य पर कदापि नहीं पहुंच सकता। इसलिये इतिहास एवं पुराण पढ़ना कभी न भूलें। इतिहास एवं पुराण ही साक्षी का साक्षात्कार कराने में विशेष सहायक बतलाये गये हैं। साक्षी का साक्षात्कार सरलता से हो इस विषय में इस अद्भुत एव शिक्षा-प्रद इतिहास को ध्यान से सुनिये और पढ़िये। जिसको पढ़ने, सुनने एवं विचार करने से निश्चय ही साक्षी का ज्ञान होगा, जिससे परम पद की प्राप्ति होगी ।।१।।

(छन्द)

किसी देश के महीपती को, शौक शिकार का रहता था।
रैन दिवस का ध्यान न रहता, भूख प्यास को सहता था।।
इक दिन राजा मन्त्री को ले, खेलन दूर शिकार गया।
खेलत खेलत प्यास लगी बहु, जिस कारण लाचार भया।।
वहाँ जंगल में पेड़ के नीचे, राजा जाकर बैठ रहा।
पानी कारण प्राण जात हैं, मन्त्री को ये वचन कहा ।।१।।

कहते हैं कि किसी देश में एक धर्मात्मा राजा राज्य करता था। उसे शिकार खेलने का इतना तो शौक था कि जब जब वह शिकार खेलने जाता था, तो सब बातें भूल जाता था। यहां तक कि भूख, प्यास, आराम तो क्या पर दिन, रात की भी उसे सूझ नहीं पड़ती थी। वैसे तो राजा सेवकों को साथ लेकर शिकार पर जाया करता था, पर एक दिन दैव योग से केवल प्रधान मन्त्री को ही साथ लेकर नगर से बहुत दूर एक घने जंगल में जा निकला। वहां शिकार खेलते खेलते राजा को थकावट महसूस होने लगी, और

प्यास भी खूब सताने लगी । मन्त्री को अपनी हालत बताकर राजा
भी पानी की तलाश की मगर पानी न मिल सका । अन्त में राजा घ
मन्त्री का सहारा लेकर एक पेड़ के नीचे छाया में बैठ गया । जब घ
थोड़ी कम हुई, तब राजा मन्त्री को कहने लगा कि पानी के बिना मेरे
सूखे जा रहे हैं । जल्दी से पानी पिलाओ, नहीं तो मेरे प्राण निकल जा
पानी पानी कहता हुआ राजा अचेत हो गया ।।१।।

(दोहा)

ऐसे सुन मन्त्री कहा, राजन धीरज धार ।
पानी लेकर आत हूँ, थोड़ी देर मंझार ।।२

अपने राजा की यह गंभीर स्थिति देखकर जैसे तैसे राजा को
कर मन्त्री ने हाथ जोड़कर निवेदन की कि, आप का कल्याण हो महाराज !
चिन्ता न करें हिम्मत से काम लें, मैं अभी जाकर जल्दी पानी ले आता हूं ।

(छन्द)

राजा की यह दशा देखकर, मन्त्री बहु घबरान लगा
गहन जंगल में इधर उधर वह, दौड़ धूप बहु करन लगा
पानी कारण ऊंचे तरु पर, मन्त्री आखिर जाय चढ़ा
वहाँ पास में अनार का इक, सुन्दर बगीचा दीख पड़ा ।
जल्दी राव के पास पहुंचकर, सारा हाल सुनाया जी
जैसे तैसे राव को लेकर, मन्त्री बाग में आया जी
बाग में आया देख भूप को, माली मनि हर्षाया जी
नम्र वचन कह आसन देकर, आदर साथ बिठाया जी ।।३

अपने राजा की यह दयनीय दशा देखकर मन्त्री भी घबरा तो
था, फिर भी हिम्मत रखकर घने जंगल में इधर उधर पानी की तलाश क
लगा । आखिर में कोई चारा न देखकर मन्त्री एकदम एक लम्बे पेड़ पर
गया । पेड़ पर चढ़कर चारों ओर नजर घुमाकर देखा तो उसे बिल्कुल
में ही एक अनारों का सुन्दर बगीचा दीख पड़ा । बगीचा देखकर मन्त्री

प्रसन्न हुआ, बड़ी उतावली से राजा के पास जा पहुंचा। थोड़े में सब समाचार बताकर जैसे तैसे राजा को बाग में ले गया।

अपने राजा और मन्त्री के बाग में पधारने का शुभ समाचार पाकर माली दौड़ता हुआ राजा के पास जा पहुंचा। पांव छूकर प्रणाम किया, फिर मधुर एवं नम्र वचनों से राजा का स्वागत सत्कार कर उन्हें सादर अपनी बैठक में ले जाकर आसनों पर बैठाया ॥२॥

(दोहा)

माली तब कहने लगा, जोड़े दोनों हाथ।
कहिये क्या सेवा करूं, आज्ञा दीजे नाथ ॥३॥

आसन पर विराजमान राजा के सामने हाथ जोड़कर माली कहने लगा, हे नाथ ! आज्ञा दीजिये क्या सेवा करूं ॥३॥

(छन्द)

ऐसा सुनकर वज़ीर बोला, पानी जल्दी लाओ जी।
राजा को बहु प्यास लगी है, उसकी प्यास बुझाओ जी ॥
माली प्रसन्न होकर भागा, रस अनार ले आया जी।
अपने राव को निज हाथों से, प्रेम के साथ पिलाया जी ॥
अमृत सम रस पान करन से, राजा को बहु चैन भया।
माली के हित राजा के मनि, दया भाव कुछ आय गया ॥

माली की प्रार्थना सुनकर मन्त्री ने आज्ञा दी कि जल्दी पानी ले आओ, क्योंकि राजा जी को बहुत प्यास लगी है। पानी पिलाकर उनकी प्यास बुझाओ।

राजा की सेवा का सुअवसर पाकर माली बहुत प्रसन्न हुआ। जल्दी भाग कर अनार रस का एक बड़ा प्याला भरकर ले आया। बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम से अपने हाथों से राजा को पिलाने लगा। अमृत समान रस

पीते ही राजा की घबराहट, बेचैनी और थकावट सब दूर हो गयी
जीवन पाकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। भोले भाले माली की सेवा, प्रे
बोल-चाल पर राजा को बहुत आनन्द आया। माली की गरीबी पर भी
को दया आ गयी ॥३॥

(दोहा)

लख माली के नेह को, कहन लगे मनि राव।
माफ करूं "कर" गरीब का, उपजा मनि यह भाव।।

माली के हार्दिक प्रेम को देखकर राजा के मन में यह भ
उत्पन्न हुई कि इस गरीब माली की सहायता करनी चाहिये। बाग
आदि का कर (टैक्स) माफ कर देना चाहिये। साथ-साथ माली क
मजबूरियों का भी विचार करने लगा ॥४॥

(छन्द)

माली को कुछ सुविधा नाहीं, दूर जंगल में रहता
बिन बिजली बिन मार्ग के वह, भारी संकट सहता है
राजा का यह परम धर्म है, सकल प्रजा को सुखी क
तन मन धन पुनि वाणी करके, सब जीवों के दूख हरे
यही सोच मनि राजा बोला, माली रस ले आओ ज
मुझ को फिर भी प्यास लगी है, प्याला और पिलाओ जी
आज्ञा पाकर माली जाकर, चार अनार ले आया ज
राव के आगे चारों पुणिकर, प्याला और पिलाया जी।।

राजा सोचने लगा कि एक तो माली नगर से बहुत दूर जंगल में
है। दूसरा वहां तक न तो बिजली का प्रबन्ध है न पक्की सड़क। माल
शहर तक आने जाने में काफी कष्ट होता होगा। प्रजा के बारे में

विचार कर राजा फिर राज-धर्म का विचार करने लगा, कि राजा का यह परम कर्त्तव्य है कि प्रजा के सभी कष्टों एवं कठिनाइयों को यथा सम्भव दूर करने का प्रयास करे। तन, मन, धन और वाणी से सब जीवों को सुख पहुँचावे। इस प्रकार मन में सोच विचार कर माली को राजा कहने लगा, माली! मुझे और भी प्यास लगी है, एक प्याला और पिलाओ। आज्ञा पाकर माली चार अनार ले आया और राजा के सामने रस निकाला और प्याले में डालकर राजा को पीने के लिये दिया ।।४।।

(दोहा)

राजा ने जब रस पिया, तब मनि करा विचार।
मेरे सम मूरख नहीं, होगा इस संसार ।।५।।

अब की बार जब राजा ने रस पिया तो उनके विचार बदल गये सोचने लगा कि मेरे जैसा मूर्ख संसार में और कोई भी न हुआ है, न होगा ।।५।।

(छन्द)

चार अनार के रस से इतना, भर गया बड़ा प्याला जी।
मैंने सब कुछ जान लिया अब, बाग है कीमत वाला जी ।।
अब तक मुझको इस माली ने, दिया न कर इक पाई है।
क्यों ना "कर" को दूना कर दूं, इसको बहुत कमाई है ।।
अब तो मैं इस माली से यह, बाग अनार का ले लूंगा।
नहिं माना तो भय दिखलाकर, थोड़े पैसे दे दूंगा ।।
निश्चय कर फिर बात बनाकर, माली को धनवाद दिया।
माली मेरे प्राण बचाकर, तुमने बड़ उपकार किया ।।
महा सुन्दर यह देख बगीचा, मेरे मनि बहु भाया है।
अनार का रस और पिलाओ, मुझको प्यास सताया है ।।५।।

क्योंकि बिना सोचे समझे माली को गरीब समझकर उसे सुख स
पहुँचाने का विचार कर रहा था, परन्तु यहां तो बात ही कुछ औ
माली ने अभी मेरे सामने ही चार अनार निचोड़े थे, जिनसे इतन
प्याला रस से भर गया था। अब तो मैं सब कुछ समझ गया। यह
अधिक उपजाऊ और बड़ा कीमती लगता है। माली को इससे बड़ी
होती होगी। राजा माया के चक्कर में आ गया। पराई सम्पत्ति क
कर प्रायः सबका मन ललचा जाता है। लोभ लालच ही माया के हा
हैं। आंख, कान, जीभ, नाक एवं चमड़ी के रास्ते से ही यह माया मनु
मन तक पहुंच जाती है। जब मनुष्य माया के फन्दे में पूरी तरह से
जाता है तब वह अंधा और बहरा बन जाता है। उसे उचित-अनुचित,
बुरा, हानि-लाभ, अपना-पराया, आदि कुछ भी नहीं सूझता। सन्त,
भगवान एवं शास्त्र आदि पूज्य देवी देवताओं की अवहेलना करने में भी
चूकता। इसलिये इस माया को (जिसके हाथों में काम, क्रोध एवं लोभ
अमोध अस्त्र हैं) प्रबल एवं दुस्तर बताया गया है। विशेष कर नकली
ही इस माया के चंगुल में फंसते हैं।

वैसे तो राजा धर्मज्ञ एवं न्याय प्रिय था, पर लोभी मन और ला
आंखोंने राजा को धोखा दिया। इसलिये राजा गरीब माली के सारे बगीचे
अपने कब्जे में लेने के लिये इस प्रकार की योजना बनाने लगा। "यह म
मेरे राज्य में रहते हुए भी आज तक मेरी दरबार में नहीं आया है, न ही
व जमीन का 'कर' दिया है, देखा जाय तो अनारों से माली को क
कमाई होती है। अब इसको कड़ा दण्ड देना चाहिये, और कर भी दूस
दुगुना लगाना चाहिये। जिस किसी बहाने से माली को डरा धमका कर
पैसे देकर सारा बाग ले लेना चाहिये"। इस प्रकार मन में निश्चय कर
बनाकर माली को धन्यवाद देते हुए राजा कहने लगा माली! तुम ने
प्राण बचाकर बड़ा उपकार किया है। जन्म भर तुम्हारे एहसान को
भूलूंगा। अनारों से लदे सुन्दर बगीचे और तुम्हारे हार्दिक स्नेह को देख
मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूं, अनारों का रस अमृत समान लगता है, जी चा

(है) कि रस पीता ही रहूं। एक प्याला और भी पिलाओ। राजा के वचन (स)ुनकर सरल हृदय माली बहुत खुश हुआ ।।५।।

(दोहा)

आठ अनार निचोड़ कर, डाले प्याले मांहि।
जो रस पहले निकसिया, सो रस निकला नांहि ।।६।।

आज्ञा पाकर अनार लेकर माली रस निकालने लगा। एक के बाद (ए)क बराबर आठ अनारों को निचोड़ा, फिर भी वह रस नहीं निकला, जो (कि) थोड़ी देर पहले मात्र चार अनारों में से निकला था ।।६।।

(छन्द)

अनार रस का देख तमाशा, राजा अति हैरान भया।
माली से तब लगा पूछने, पहला रस वो कहां गया ।।
पहले चार अनार के रस से, भर गया प्याला पूरा जी।
अब तो आठ अनार निचोड़े, फिर क्यों रहा अधूरा जी ।।
बोलो माली क्या है कारण, मुझे बड़ा वीचारा है।
तुम्हरें इस बगीचे में या, अनार में इसरारा है ।।६।।

राजा का पूरा ध्यान माली की ओर था (जो कि रस निकाल रहा था), माली ने रस निकालकर राजा को पीने के लिये दिया। माली से रस का प्याला लेकर राजा ने पिया तो सही, लेकिन वह स्वाद नहीं आया। यह तमाशा देखकर राजा बड़े आश्चर्य में पड़ गया। माली से पूछने लगा "अरे माली! बताओ तो सही, क्या कारण है जो अब की बार आठ अनारों से भी न तो वह रस ही निकला और न वह स्वाद ही आया? क्या तुम बदल गये, या अनार बदल गये। या बगीचे, अनारों अथवा तुम्हारे हाथों में कोई जादू है? माली, मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। अगर तुम जानते हो तो मुझे सही सही बताओ, आखिर बात क्या है ।।६।।

(दोहा)

माली तब कहने लगा, सुनिये भूप सुजान।
जितना मुझ को ज्ञान है, उतना करूं बखान ।।

राजा के मर्म भरे बचन सुन कर माली हाथ जोड़ कर कहने
"हे राजन् ! मैंने जो कुछ समझा है वह अपनी बुद्धि के अनुसार बता
कृपया सुनिये ।।७।।

(छन्द)

भगबत की निज कृपा से अब, जरा समझ में आया
राजन तेरे भाव के अन्दर, सारा खेल समाया है
पहले तेरे मन में राजन्, शुभ फुरना को आया थ
जिसने सभी अनारों को भी, बहु रसदार बनाया था
राजन् तेरे शुभ फुरने ने, बाग को सुन्दर सजाया थ
और तो मेरे मनि भी राजन, अद्भुत आनन्द छाया था

अन्नदाता ! सच पूछिये तो यह तमाशा देखकर मैं भी अचरज
गया हूं। जब आप इस गरीब के बाग में पधारे थे, उस समय मेरे
एक अजीब सी खुशी लहरा रही थी। अनारों में भी लबालब रस भ
था। सब कुछ सुखद सुहावना नजर आ रहा था। जो पहले कभी नहीं
था। लेकिन अब थोड़ी सी देर में सब बातें जादू हो गयीं, न जाने कहां
गयीं। राजन् मैं तो गंवार और मन्द मति हूं। इस माया को क्या ज
फिर भी आपकी आज्ञा को नहीं टाल सकता। भगवान की कृपा से ज
थोड़ा बहुत समझ पाया हूं वह यह है कि जो कुछ तमाशा आपने देख
सब आपकी भावना का ही खेल है। मेरी समझ में तो पहले आपने शु
से कोई शुभ फुरना किया होगा, जिस कारण सारा बगीचा हरा-भरा ह
था। अनारों में भी रस भर गया था, मेरे मन में भी एक अद्भुत आन
गया था ।।७।।

(दोहा)

अब तो शायद आपने, बदल दिया है खयाल।
जां कर रस अनार का, सूख गया तत्काल ॥८॥

परन्तु राजन् ! अब शायद आपने किसी विशेष कारण से अपने खयाल को बदल दिया हो, जिस कारण इतनी जल्दी अनारों का रस सूख गया ॥८॥

(छन्द)

सभी फलों का सूख गया रस, वृक्ष सभी मुरझाये हैं।
नदियां नाले सूख गये सब, फूल कमल कुम्हलाये हैं ॥
राजन् तुमने खराब फुरने, अपने मन में लाये हैं।
जिन फुरनों ने शान्त मण्डल में, फेर बदल करवाये हैं ॥
फुरने का यह फेरा है सब, दूजा कुछ भी नाहीं है।
राजन् अब तुम दिल में देखो, रोला ये किस माहीं है ॥८॥

माली अपने बगीचे की हालत देखकर विकल हो गया, और दीन वाणी में राजा को कहने लगा "हे नाथ ! बगीचे की ओर तो जरा देखो ! अनारों का रस तो सूख गया पर वृक्षों के पत्ते भी झड़ गये। नदी-नालों का पानी तक सूख गया। फूल लताएं कुम्हला गयीं। राजन् ! आपने अपने मन में न जाने ऐसा कौनसा खराब फुरना (संकल्प) किया है, जिस ने नीरव शान्त वातावरण को क्षुब्ध कर दिया है, जलवायु को भी दूषित बना दिया है। सारी प्रकृति को ही बदल दिया है। राजन् ! ये सब आपके भावों का ही जादू है। मुझे तो ऐसा ही समझ में आ रहा है। और कोई कारण मुझे दिखाई नहीं देता। हे नाथ ! अब आप अपने मन में विचार कर देखें तो यह सब गड़बड़ किसमें है ?" इतना कहकर माली डरते हुए हाथ जोड़कर कहने लगा "राजन् ! मैंने जो कुछ कहा है उसके लिये मुझे क्षमा करें। हो

सकता है मेरे विचार गलत हों। क्योंकि मैं अनाड़ी हूं, राजाओं के बात क्या जानूं। न जाने आपके मन में किस प्रकार के विचार पैदा हैं। जिन्हें मैं ठीक-ठीक नहीं जानता। आप अपने विचारों के साक्षी ह आप कारण बताकर मेरे संशय, शोक एवं भय को दूर करने की कृपा आप हमारे माता-पिता हैं ॥८॥

(दोहा)

माली के सुन मर्म के, अनुभव वचन रसाल।
सारी बात के भेद को, समझ गये भूपाल ॥६॥

यद्यपि माली के वचन कड़ुवे और दिल में तीरों की तरह चुभने थे, फिर भी हितकर और युक्तियुक्त थे। वैसे प्रिय और मधुर वचन वाले लोग तो हर जगह आसानी से मिल जाते हैं। परन्तु कड़ुवे कल्याणकारी वचन सुनने वाले भी दुर्लभ हैं तो सुनाने वाले भी दुर्लभ यथा :—

श्लोक :—सुलभाः पुरुषा राजन्सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभ

बुद्धिमान लोग कहते हैं कि जहां कड़ुवे एवं लाभदायक वचन एवं सुनाने वाले हों वहां पर सुख सम्पत्ति सदैव बनी रहती हैं।

श्लोक :—अप्रियस्यापि पथ्यस्य, परिणामः सुखावहः
वक्ता श्रोता च यत्रास्ति, रमन्ते तत्र सम्पद

वचन तो कड़ुवे हों पर फल अमृत समान हो, ऐसे वचन सुनने सुनाने वाले जहां निवास करते हैं, वहां सुमति और सम्पत्ति निवास क है। वास्तव में अपना कल्याण चाहने वाले बहुत थोड़े लोग होते हैं। क जो वचन हितकर होंते हैं, वे आरम्भ में जहर के समान कड़ुवे होते कड़ुवे वचनों के पड़दे में ही शाश्वत सुख छिपा रहता है। जो कोई भी

वचनों को सहर्ष सहन करने की क्षमता रखता हो, उसे ही शाश्वत सुख की प्राप्त हो सकेगी ।

श्लोक :—यत्तदग्रे विषमिव, परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ।।

गीता का भी यही उपदेश है कि जो आरम्भ में ज़हर के समान हो और अन्त में अमृत के समान हो उसे सच्चा सुख कहते हैं । शास्त्र के रहस्य को न जानने वाले, आत्मश्लाघी (अपने मुख से अपनी प्रशंसा करने वाले) अपनी प्रशंसा में प्रसन्न और अपनी निन्दा में अप्रसन्न होने वाले, अपनी कला, विद्या, बुद्धि, शक्ति, सम्पत्ति और बड़प्पन आदि का घमण्ड करने वाले लोग प्रायः कड़ुवे वचन (जिनका फल अमृत समान होता है) सहन नहीं करते, क्योंकि कड़ुवे वचनों के आरम्भ में ज़हर लगा रहता है, ऐसा कौन होगा जो आंखों देखा ज़हर पीयेगा । ऐसे वचन सुनकर लोग या तो सुनी अनसुनी कर देते हैं, या लड़ने को तैयार हो जाते हैं । इसलिये शाश्वत सुख को प्राप्त नहीं कर सकते ।

''यद्यपि राजा लोभ के वश में हो गया था, फिर भी धर्मज्ञ एवं न्यायप्रिय राजा ने माली के वचनों को, जो कि मीठे एवं मर्म भरे थे, धैर्य और ध्यान से सुना । सारी बात को समझा तथा मन ही मन अपनी भूल का अनुभव कर राजा पश्चात्ताप करने लगा ।।६।।

(छन्द)

माली को तब कहा भूप ने, ना कुछ गलती तेरी है ।
माली तुमने साच बताया, सारी गलती मेरी है ।।
बाग भूमि का टैक्स सारा, माफ तुम्हें कर देता हूँ ।
जल्दी कोरा कागज लाओ, अपनी सही कर देता हूँ ।।
जिसने जाना उसी देव को, कहे टेऊँ जा पाऊँगा ।
दर्शन कर उस परमदेव का, जीवन सफल बनाऊँगा ।।६।।

भूल को स्वीकार करना, उसके दण्ड को भुगतना तथा फिर
न करना। भूल के प्रायः ये तीन अङ्ग बताये गये हैं। उपरोक्त तीनों
का पालन करना अत्यन्त कठिन कार्य है। साधारणतया तो ऐसा देख
है कि कुछ लोग तो अपनी भूल कभी स्वीकार ही नहीं करते, उलटा
बतलाने वालों के ज़ानी दुश्मन बन जाते हैं। कुछ लोग अपनी गलती
स्वीकार न कर दूसरों के माथे पर मढ़ देते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते
बार-बार गलती करते रहने पर भी अपने को सत्यवादी एवं बुद्धिमान स
हैं। जब साधारण से साधारण लोग भी अपनी गलती स्वीकार कर
तैयार नहीं होते तो राजाओं-महाराजाओं का तो कहना ही क्या है। व
वे सब कुछ करने में समर्थ होते हैं। अगर राजा चाहता तो माली से
कुछ छीनकर उसे देश से बाहर निकाल सकता था। परन्तु राजा धर्म
था ही, जड़ प्रकृति ने भी प्रत्यक्ष दर्शन देकर उसे अपनी भूल का अ
कराया था। साक्षी ने भी उसे सावधान कर दिया था। इसलिये अपनी
समझकर माली को अभयदान देते हुए राजा ने कहा—

"माली ! अब डरने या घबराने की जरूरत नहीं है। तुम स
निर्दोष हो। सब गलती मेरी है। तुम्हारा एक-एक वचन सत्य धर्म से
हुआ है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। मैंने जब तुम्हारे वचनों का विचार
तो अपने को ही दोषी पाया। सचमुच नीच स्वार्थ के वश होकर मेरे
बदल गये थे, तुम्हारा सारा बगीचा मैं अन्याय से हड़प करना चाहता
अब तुम अपने मन से भय, शोक और संशय को निकाल दो और जल्
एक कोरा कागज ले आओ तो मैं अपने हस्ताक्षर कर तुम्हें सदा के लिये
बाग आदि के कर से मुक्त कर दूं।"

आज्ञा पा कर माली कागज ले आया। कागज लेकर राजा ने
ही शुद्ध मन एवं शुद्ध भाव से हस्ताक्षर किये, त्यों ही माली के जीवन में
से वही बहार आ गयी। राजा के मन में भी एक अजीब सी खुशी लह
लगी। उमंग में भरकर राजा ने कहा,

"माली ! आपने मेरी आंखें खोल दी, मैं तो मोह की नींद में सो रहा था। अब जिस देव ने इस रहस्य को जाना और स्वीकार किया है, उसका दर्शन कर अपना जीवन सफल बनाऊंगा" ॥६॥

(दोहा)

ऐसे कह राजा गया, अपने राज मंझार।
कहे टेऊँ अब ध्यान से, सुनो कथा का सार ॥१०॥

माली से ऐसा कहकर राजा, मन्त्री सहित अपने नगर को चला गया। तपस्या कर उस परम देव का दर्शन कर राजा परम पद को प्राप्त हो गया ॥१०॥

(दोहा)

साक्षी का प्रकाश है, तीन लोक के माँहि।
पाप कर्म बद भावना, भूल करो कब नाँहि ॥११॥

उपरोक्त कथा का सार तत्त्व समझाते हुए स्वामी टेऊँरामजी महाराज कहते हैं कि तीनों लोक साक्षी के प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं। परन्तु जिस पर गुरु की कृपा होती है उसे ही साक्षी का दर्शन होता है। गुरु कृपा किसको कहते हैं ? कैसे होती है और किस पर होती है ? इन सब प्रश्नों के ठीक-ठीक उत्तर इतिहास और पुराण ही दे सकते हैं। सच्चे हृदय से गलती को स्वीकार करना ही साक्षी का दर्शन कहलाता है। छल, कपट या बल प्रयोग से अपनी गलतियों को छिपाना नहीं चाहिये। आज नहीं तो कल, गलती प्रकट हो ही जायेगी, फिर शर्मिन्दा होना पड़ेगा।

॥ कथा ॥

पचास घरों की एक छोटी सी बस्ती में एक धनी-मानी जमींदार रहता था। जिसके पास एक तेज चलने वाला घोड़ा था। उसी बस्ती के एक बनिये के पास भी एक घोड़ा था, जो जमींदार के घोड़े से भी तेज चलने वाला था। जब कभी दस-पांच लोग आपस में मिलते थे तो बात चलते घोड़ों

के बारे में भी बात चल पड़ती थी। आखिर में यह बात जमींदार के तक जा पहुँची। जमींदार ने अपना अपमान होता देख कर, ब बुलाकर घुड़दौड़ की बाजी लगा ली। दूसरे दिन निर्धारित मैदान में नि समय पर जमींदार और बनिया दोनों घोड़े लेकर आये। दर्शक ल तमाशा देखने के लिये इकट्ठे हो गये। जमींदार और बनिये ने घुड़ भाग लिया। दोनों घोड़ों को दौड़ा कर बहुत दूर निकल गये। जब लौटने लगे तब जमींदार का घोड़ा पीछे रह गया। अपनी हार होती जमींदार ने अपना बल प्रयोग करना चाहा, साक्षी ने तुरन्त ऐसा न क लिये संकेत किया, लेकिन जमींदार ने उसे नहीं माना और एकदम कड़ बोला "अरे बनिये! ठहर जा।"

आवाज सुनकर बनिये ने घोड़ा रोक लिया। वहां पहुंच कर ज ने बनिये से कहा कि तुम अपना घोड़ा मेरे पीछे कर लो। बनिये ने के अनुसार किया। जमींदार से आज्ञा लेकर बनिया कहने लगा, "ज साहब! आपकी बात मैं समझ गया। आप अपने बल प्रयोग से शर्त चाहते हो। आप बड़े हो जो चाहो कर सकते हो। अन्याय से विजय तो मिल जायेगी। दर्शक लोग (जिन्हें सत्य तथ्य का कुछ पता आपको वहां पर पहले पहुंचा हुआ देखकर आपको विजेता घोषित क आपने शायद यह समझा होगा कि यहां पर दूसरा कोई नहीं देखता। इ बनिये को डरा-धमका कर शर्त जीत लूंगा। पर यहां पर आपका सा तो मौजूद है। आप जरा अपने साक्षी से यह पूछ कर बताओ कि हकी किसका घोड़ा तेज है? जमींदार साहब! यह फैसला मैं आप पर छोड़त

बनिये की बात सुनकर जमींदार को साक्षी का संकेत याद आ लज्जित होकर कहने लगा कि आपका घोड़ा बराबर तेज है।

कथा का मतलब तो साक्षी प्रत्येक व्यक्ति के साथ है। इसलि भावना कभी भी नहीं करनी चाहिये।

।। कथा ।।

कोई एक बुढ़िया थी जो अपनी जवान बेटी को लेकर पास वाले गांव में जा रही थी। चलते-चलते दोनों थक गयीं और शाम का समय भी हो गया। गांव अभी कुछ दूर था। कहीं रात न हो जाये, इस आशंका के कारण बुढ़िया घबराने लगी। यह सोच ही रही थी कि इतने में एक घुड़सवार जवान उसी गांव की तरफ जाता हुआ वहां आ पहुंचा। घुड़सवार को देखकर बुढ़िया को कुछ भरोसा हुआ। घुड़सवार जब नजदीक आया तब बुढ़िया ने कहा "बेटा! भगवान तुम्हारा भला करे। हम दोनों थक गये हैं, मेरी बेटी को घोड़े पर चढ़ाकर साथ लेते जाओ और सामने वाले गांव में इसे छोड़ दो, मैं पीछे से आ जाऊंगी।"

बुढ़िया की बात सुनकर घुड़सवार ने कहा "मांजी! मुझे बहुत दूर जाना है, इसलिये मैं नहीं ले जाऊँगा।" ऐसा कहता हुआ घुड़सवार चला गया।

थोड़ी दूर जाने पर घुड़सवार ने सोचा, "मैं कितना मूर्ख हूं। कितना अच्छा होता जो उस लड़की को घोड़े पर चढ़ा लेता और भगा ले जाता, तो बुढ़िया क्या करती।" बुरी भावना मन में आते ही घुड़सवार वापिस आने लगा।

इधर बुढ़िया ने सोचा, "मैं भी कितनी गंवार व मूर्ख हूं। न जान न पहचान, ऐसे ही अपनी बेटी को घुड़सवार के साथ भेज रही थी। अच्छा हुआ जो उसने नहीं माना। यदि मेरी बेटी को गांव में न छोड़कर भगा ले जाता तो मैं क्या करती। अच्छा हुआ जो भगवान ने बचा लिया।"

इतने में घुड़सवार भी वहां आ पहुंचा, घोड़े से उतरकर बुढ़िया को कहने लगा, "मां जी! मैंने बहुत गलती की, आगे जाकर मन में आया कि किसी की सहायता करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। यह सोचकर वापिस आया हूं, अब आप अपनी लड़की को मेरे साथ कर दीजिये, मैं उसे गांव में छोड़ता हुआ आगे चला जाऊंगा।"

घुड़सवार की बात सुनकर बुढिया मुसकरा कर कहने लगी, "बे
जिस साक्षी ने तुम्हें सहायता के लिये वापिस भेजा है, वह साक्षी मुभे
बता गया है। तुम्हारे जाने के बाद साक्षी ने मुझे सावधान किया कि
भोली बुढ़िया ! तू अपनी बेटी को घुड़सवार के साथ भेज तो रही थ
यदि घुड़सवार तेरी बेटी को भगा ले जाता तो तू क्या करती ! बेटा !
सच बताओ, अब तुम इस इरादे से वापस आये हो न ?

"बुढ़िया की बात सुनकर घुड़सवार लज्जित होकर चला गया।"

इस कथा से भी स्पष्ट है कि बुरी भावना ही पाप कर्म में ल
है। जिसका फल है दुःख। इसलिये शारीरिक और मानसिक दुःखों से
के लिये सदैव शुभ चिन्तन करना चाहिये ॥११॥

(छन्द)

साक्षी चेतन सब घट माहीं, करत सदा चमकारा है
पाप पुण्य को देख रहा है, अन्तर खेलनहारा है
सब से मिलिया सब से न्यारा, अक्रिय अनुभव रूपा है
सोई साक्षी ब्रह्म स्वरुपा, जिस की ऊप अनूपा है
कहे टेऊँ सो जान सर्व में, किसका बुरा न करना जी
भाव अच्छा धर हृदय माहीं, जीवनमुक्त विचरनाजी ॥१

स्वामी टेऊँरामजी महाराज वेद के तत्व को सरल शब्दों में समभ
हुए कहते हैं कि जो साक्षी है वह ही चेतन है। जिस साक्षी का घट घट
निवास है, वह ही हर दिल में चमक रहा है।

॥ कथा ॥

किसी सन्त के पास दो जिज्ञासु शिष्य बनने की इच्छा से गये। व
पहुंच कर सन्त को प्रणाम किया, और आज्ञा लेकर अपने मन की इच
बता कर शिष्य बनने के लिये प्रार्थना करने लगे। परीक्षा लेने का विचार
सन्त ने दोनों जिज्ञासुओं को दो तीतर पक्षी हाथों में देकर आज्ञा दी कि अ

नों इन तीतरों को लेकर अलग अलग जाओं, एक ऐसे स्थान पर इन तीतरों ो मार कर ले आओ जहां पर आपको कोई भी न देख पावे । आज्ञा पाकर नों जिज्ञासु प्रसन्न होकर जंगल को चले गये । जंगल में थोड़ी दूर जाकर क जिज्ञासु ने वहां किसी को न देखकर एक वृक्ष की आड़ में बैठकर तीतर ो मार डाला, तीतर को मार कर शीघ्र सन्त के पास जा पहुँचा । दूसरा जज्ञासु बहुत दूर जंगल में निकल गया ।

वहां एक ऐसे स्थान की खोज करने लगा जहां पर कोई न हो । अन्त में क ऐसा स्थान देखा जहां पर पक्षी चींटी तक कोई प्राणी न था, वहां पर एक क्ष के नीचे बैठ गया, फिर भी बड़ी सावधानी से चारों ओर देखा और चाकू नकाल कर तीतर के गले पर रखा और गला काटने को तैयार हुआ, तो चानक उसकी नजर तीतर के आंखों पर जा पड़ी, तीतर डर के मारे कांप हा था व ऐसे देख रहा था मानो प्राणों की भीख मांग रहा हो । तीतर की ह दशा देख कर उसके हाथ से चाकू गिर पड़ा । दिल में सोचने लगा कि द्यपि यहां पर मुझे और कोई भी नहीं देखता परन्तु यह तीतर तो मुझे देख हा है । सन्त की आज्ञा है कि जहां पर कोई न देखे, अब क्या करना चाहिये हुत कुछ सोच विचार कर जेब से एक रुमाल निकाल कर तीतर की आंखों र बांधा, फिर चारों ओर देखा, अच्छी तरह देख कर निश्चय किया कि अब ो तीतर भी नहीं देखता फिर एकदम चाकू निकाल कर तीतर को मारने के लये तैयार हुआ, इतने में उसके अन्दर से आवाज आयी कि अरे जिज्ञासु ! हां पर तुम्हें कोई भी नहीं देखता तीतर भी तुम्हें नहीं देखता पर तुम तो तीतर को देख रहे हो । अन्तर आत्मा के इशारे (साक्षी के आवाज) को जिज्ञासु समझ गया, दिल में विचार कर मन ही मन में कहने लगा कि बात तो बिल्कुल सही है, पर अब क्या करना चाहिए । सन्त की आज्ञा का पालन कैसे किया जाय ? भय और आश्चर्य के बीच में लटकते हुए जिज्ञासु ने कुछ सोचकर एक दूसरा रुमाल लेकर अपनी आंखों पर भी बांध लिया। रुमाल बांध कर चारों ओर अच्छी तरह से देखने लगा, पर अब तो उसे कुछ भी देखने में नहीं आया । यह जानकर उसे बहुत प्रसन्नता का अनुभव

हुआ, झट से चाकू निकाला और तीतर के गले पर रखा, अभी गल
वाला ही था कि फिर अन्दर की आवाज ने उसे सावधान करते हुए क
जिज्ञासु ! तू भी कितना भोला है, तुमने सोचा अब कोइं नहीं देखत
बात सही है कि तुम्हारी आंखें बन्धी हुई हैं तुम्हें कुछ भी नहीं दिखा
पर यह तो बता कि तुमने चाकू निकाल कर बिल्कुल तीतर के गले प
यह किसने देखा ? अन्दर की आवाज (जिसको साक्षी कहते हैं)
जिज्ञासु बड़ी उलझन में पड़ गया, बहुत सोचने पर भी कोई निर्णय (
न कर सका। अन्त में तीतर को लेकर वापिस सन्त के पास आया।
पाकर सन्त को सारा समाचार सुनाकर प्रार्थना कर कहा कि भगवन्
कोई भी स्थान मुझे देखने में नहीं आया जहां पर कोई भी न हो। यद्य
जंगल में और कोई भी न था, पर मैं तो वहां था ही, मैं स्वयं अप
को देख और समझ रहा था कि तीतर को मारने का विचार कर र
जिज्ञासु की बात सुन कर सन्त बहुत प्रसन्न हुआ, उसे आशीर्वाद देकर क
पुत्र ! तुम ही शिष्य बनने के अधिकारी हो। दूसरे जिज्ञासु को भी
देकर योग्य बनाया। बुद्धिमान और सज्जन लोग साक्षी की आवाज को
कर बुरे विचारों को छोड़कर अच्छे विचारों पर चलकर अपना भ
करते हैं और दूसरों का भी भला करते हैं।

वह ही प्रत्येक मनुष्य द्वारा किये गये या करवाये गये पाप
पुण्य को देखता रहता है। आश्चर्य यह है कि मनुष्य पाप कर्म यह स
करता है कि मुझे कोई भी नहीं देखता। परन्तु सूर्य, चन्द्र, जल, वायु,
आकाश, दिशाएं आदि देवता तो सदा सावधान होकर उसे देखते रह
फिर भी अगर कोई ऐसा न माने तो स्वयं कर्ता तो अपने कर्म को (ज
करता है) देखता ही है। जैसे किसी का धन चोरी हो गया हो, वह
चोर को देख या पहचान न सके, पर जिसने चोरी की है वह चोर त
किये हुए कर्म को जानता है, कि मैंने कब और किस तरीके से चोरी
चोरी का माल कहां छिपाया है, मैं कहां पर छिपा हूं आदि सब कु

जानता है। चोर स्वयं अपने कर्म का गवाह है। क्योंकि पकड़े जाने पर जब पुलिस की मार पड़ती है तब चोर स्वयं सब कुछ बता देता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कर्म को जानता है जैसे :—कम नाप रहा हूं, कम तोल रहा हूं, मिलावट कर रहा हूं, एक चीज दिखलाकर दूसरी दे रहा हूं, जालसाजी कर रहा हूं, उत्कोच (घूस) ले रहा हूं, झूठी गवाही दे रहा हूं, अन्याय और शक्ति से परायी सम्पत्ति हड़प रहा हूं, पैसे देकर अपनी यश कीर्ति करवा रहा हूं, अपना मतलब पूरा करने के लिये बड़े लोगों का आगा-पीछा कर रहा हूं, अखबारों में मन-गढ़न्त लेख छपवा कर अपने को योगी, पण्डित आदि उपाधियों से मशहूर करवा रहा हूं, पैसे और पद की लालच के लिये अयोग्य लोगों की महिमा गा रहा हूं और योग्य लोगों का अपमान कर रहा हूं।

इस प्रकार की अनेक बाते हैं जिन्हें दूसरा कोई जान नहीं सकता, परन्तु कर्त्ता (करने वाला) अच्छी तरह जानता है, बस उस जानने वाले, गवाही देने वाले को ही साक्षी कहते हैं। भले ही ब्रह्म-ज्ञान सुने या सुनावे तथा गुरु भी लाख बार समझावे परन्तु जब तक उपरोक्त बातों को जो मनुष्य स्वयं समझता और करता है, नहीं छोड़ेगा, तब तक ज्ञान-विज्ञान सहित ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त नहीं होगा और संसार के बन्धन भी नही कटेंगे। वह साक्षी सबसे मिला हुआ भी है तो न्यारा भी है। उस अजर, अमर, अक्रिय, अविनाशी और ब्रह्म रूप साक्षी की महिमा अपार है। वह साक्षी जिसका नाम सत् है उस "सत्नाम साक्षी" को अपने ऊपर गवाही देने वाला गवाह समझो। मन, कर्म और वचन से किसी की बुराई मत करो। जिस सम्पत्ति के अब तुम मालिक बने हो वह सम्पत्ति पहले किसी और की थी, तुम्हारे बाद फिर किसी दूसरे की बन जायेगी।

शरीर और शरीर से सम्बन्ध रखने वाले सभी पदार्थ तो क्षण भंगुर हैं, देवों और दानवों को जीतने वाला रावण कहां है ? रावण को पकड़कर उनके दस मस्तकों पर दीपक जलाकर अपने बच्चों का दिल बहलाने वाला सहस्रबाहू अर्जुन कहां है ? रावण को अपन कोख में दबाए रखने वाला बाली कहां है ? जिन शस्त्रों को उठाकर प्रहलाद का पिता हिरण्यकशिपु युद्ध

करता था, उन शस्त्रों को रावण हिला भी न सका, ऐसा महाबली हिरण्य कहां है ? एक क्षण में कौरवों और पांडवों की सारी सेना को मारने क करने वाला भीमसेन का पोता बर्बरीक कहां है ? महाराजा सगर के हजार पुत्रों को एक क्षण में भस्म करने वाले महर्षि कपिलदेवजी कहा समुद्र को एक ही घूंट में पी जाने वाले महर्षि अगस्त जी कहां है ? औ अनेक ऐसे लोग हो गये हैं जिनकी विचित्र कथाएं पुराणों-इतिहासों में जाती है। उन लोगों की शक्ति और सम्पत्ति की कल्पना आज के मानव के अत्यन्त असम्भव है। धरती वही है, लेकिन वे लोग नहीं है, न वे अटारियां न वे कोट किले। नश्वर संसार में न कोई रहा है, न रहेगा।

ऐसा निश्चय कर अपने मन में शुभ भावनाएँ भरो। न स्वयं क पड़ो, न दूसरों को कष्ट में डालो। अपनी जीवन यात्रा सुखद बना "सत् नाम साक्षी" को जीवन साथी बना लो। संसार में स्वार्थ रहित ह विचरो ॥११॥

(दोहा)

साक्षी के स्वरूप की, कही कथा विस्तार।
कहे टेऊँ पूर्ण भई, अमरापुर दरबार ॥१२॥

साक्षी किस को कहते हैं ? इस विषय में स्वामी टेऊँरामजी महा के रचे हुए पवित्र पुस्तक साक्षी दर्शन का सविस्तार वर्णन किया गया। कोइ भी इस पवित्र कथा को श्रद्धा-भावना से पढ़ेगा, सुनेगा अथवा सुना तो उसके समस्त पाप नाश हो जायेगे। अन्त में उसे मुक्ति प्राप्त होगी। को पवित्र बनाने के लिये "साक्षी दर्शन" का नित्य पाठ करना चाहिये ॥१

हे परमात्मा ! सबको सुमति दो। भक्ति दो। शक्ति दो। श्रद्धा द
विश्वास दो। धैर्य दो। आरोग्यता दो। सौजन्यता द
सन्तोष दो। शान्ति दो।

॥ इति शुभम् ॥

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

दो शब्द

आचार्य सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँरामजी महाराज के लाड़ले शिष्य परमहंस अवधूत श्री स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज (जिन्होने गुरुमुख गीता की रचना की) के विषय में जितना कुछ लिखा जाय वह थोड़ा ही है, वह सच्चे एवं पहुचे हुए महापुरुष थे। दूसरों को सत्य कहने से पहले वे अपने आप को सत्य कहते थे। अपने जीवन में किसी भी दुनियाई पदार्थ का सग्रह नहीं किया। सदा अपनी मस्ती में मस्त रहते थे, और अपने गुरुदेव की याद में तल्लीन रहते थे। अन्त तक गुरुदेव की आज्ञाओं का पालन करते रहे। स्वामी जी की बहुत कुछ रचनाए है, गुरुमुख गीता तो उनका दिल है।

दोहा :— **गुरुमुख अटपट बात है, झटपट लखे न कोय ।**
जब मन की खटपट मिटे, चटपट दर्शन होय ।।

जिन की वाणी में एक अद्भुत रहस्य भरा हुआ है। गुरुमुख गीता का एक एक शब्द विवेक शक्ति को बढ़ाने वाला है। ससार और संसारी लोगों के चक्कर से बचने के लिये, सत्य झूठ को समझने के लिये और भविष्य को बनाने के लिये गुरुमुख गीता और साक्षी दर्शन का नित्य नियम से पाठ करना चाहिये। स्वयं भी पढ़ो अपने बच्चों को भी पढ़ाओ।

—❋—

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के लाड़ले शिष्य
परमहंस श्री स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज
प्रेम प्रकाशी की रचना।

।। गुरुमुख गीता ।।

देखना है तो।

१. जवानी में छिपे बुढ़ापे को देखो।
२. जीवन में छिपी मृत्यु को देखो।
३. सुन्दरता में छिपी कुरूपता को देखो।
४. भोग में छिपे रोग को देखो।
५. सम्पत्ति में छिपी विपत्ति को देखो।
६. उन्नति में छिपी अवनति को देखो।
७ लाभ में छिपी हानि को देखो।
८. अपराध में छिपे दण्ड को देखो।
९. अहंकार में छिपे अन्धकार को देखो।
१०. सुख में छिपे दुःख को देखो।
११. यश में छिपे अपयश को देखो।
१२. उपकार में छिपे अपकार को देखो।
१३. सम्मान में छिपे अपमान को देखो।
१४. संयोग में छिपे वियोग को देखो।
१५. मित्रता में छिपी शत्रुता को देखो।
१६. मिठास में छिपी खटास को देखो।



अवधूत श्री स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज



१७. राग में छिपे वैराग को देखो ।
१८. बल में छिपी निर्बलता को देखो ।
१९. धन में छिपी निर्धनता को देखो ।
२०. अधिकार में छिपे कर्तव्य को देखो ।
२१. अत्याचार में छिपे भय को देखो ।
२२. सदाचार में छिपे साक्षात्कार को देखो ।
२३. झूठ में छिपे सत्य को देखो ।
२४. भूल में छिपे तथ्य को देखो ।
२५. आजादी में छिपी बरबादी को देखो ।
२६. पाप में छिपे नरक को देखो ।
२७. पुण्य में छिपे स्वर्ग को देखो ।
२८. जहर में छिपे अमृत को देखो ।
२९. जय में छिपी पराजय को देखो ।
३०. आदि से पहले अन्त को देखो ।
३१. आगे नहीं पीछे देखो ।
३२. समीप नहीं दूर देखो ।
३३. अपने नहीं पराये देखो ।
३४. पराये नहीं अपने देखो ।
३५. ऊपर नहीं नीचे देखो ।
३६. बाहर नहीं अन्दर देखो ।

सीखना है तो ।

१. सत्य बोलना सीखो ।
२. धर्म के रास्ते पर चलना सीखो ।
३. कर्तव्य का पालन करना सीखो ।
४. न्याय करना सीखो ।
५. सत्य की खोज करना सीखो ।

६. माता-पिता और बड़ों की सेवा करना सीखो।
७. माता-पिता बड़ों का सम्मान करना सीखो।
८. सोच समझकर कर्म करना सीखो।
९. देवी-देवताओं को नमस्कार करना सीखो।
१०. पुराण और इतिहास पढ़ना सीखो।
११. रोगियों एवं दुखियों की सहायता करना सीखो।
१२. सुख-दुःख को सहन करना सीखो।
१३. भलाई करना सीखो।
१४. वृद्धों की सेवा एवं सत्कार करना सीखो।
१५. धन और शक्ति का उपयोग करना सीखो।
१६. नम्रता और प्रार्थना करना सीखो।
१७. अन्याय-अत्याचार का सामना करना सीखो।
१८. देश के लिये बलिदान करना सीखो।
१९. नारियों का सम्मान करना सीखो।
२०. तीर्थों में स्नान करना सीखो।
२१. वचन का पालन करना सीखो।
२२ उठना, बैठना व बोलना सीखो।
२३. मीठा और हितकर बोलना सीखो।
२४. उत्तर-प्रश्न करना सीखो।
२५. शब्दों को समझना सीखो।
२६. भूल को स्वीकार करना सीखो।
२७. मेहनत से पैसे कमाना सीखो।
२८. अपने पैरों पर खड़ा होना सीखो।
२९. जीना एवं मरना सीखो।
३०. अपनी हिम्मत से आगे बढ़ना सीखो।
३१. बुद्धि से काम लेना सीखो।

३२. देखी, सुनी एवं पढ़ी बातों का विचार करना सीखो।
३३. समय की कदर करना सीखो।
३४. भूल पर पछताव करना सीखो।
३५. सच और झूठ समझना सीखो।
३६. बुराइयों से बचना सीखो।

छोड़ना है तो।

१ झूठ बोलना छोड़ दो।
२. हिंसा करना छोड़ दो।
३. सिनेमा और क्लब जाना छोड़ दो।
४. चोरी करना छोड़ दो।
५. उत्कोच (रिश्वत) लेना देना छोड़ दो।
६. नशे वाली चीजें खाना छोड़ दो।
७. मांस, मछली और अण्डे खाना छोड़ दो।
८. मिलावट करना छोड़ दो।
९. नकल करना एवं बहाना करना छोड़ दो।
१०. चुगली मारना छोड़ दो।
११. पर अपवाद करना छोड़ दो।
१२. यश, अपयश करना छोड़ दो।
१३. डरना, डराना छोड़ दो।
१४. मांगना छोड़ दो।
१५. दहेज लेना देना छोड़ दो।
१६. बुरी आदत एवं बुरा संग छोड़ दो।
१७. लोभ, लालच और क्रोध छोड़ दो।
१८. अपनी बड़ाई करना, करवाना छोड़ दो।
१९. भड़काना, भटकाना छोड़ दो।
२०. भय एवं भ्रम में डालना छोड़ दो।

२१. चापलूसी करना छोड़ दो ।
२२. कर्ज (उधार) उठाकर शौक करना छोड़ दो ।
२३. अवगुण देखना या बताना छोड़ दो ।
२४. देव स्थानों की धन सम्पत्ति हड़प करना छोड़ दो ।
२५. जुआ करना, उपन्यास (नावल) पढ़ना छोड़ दो ।
२६. धोखा करना छोड़ दो ।
२७. मर्म भेदी वचन बोलना छोड़ दो ।
२८. लापरवाही, आलस्य छोड़ दो ।
२९. विश्वासघात करना छोड़ दो ।
३०. हंसी उड़ाना छोड़ दो ।
३१. मुफ्त का माल खाना छोड़ दो ।
३२. दान एवं चंदे के पैसे चुराना, हड़पना छोड़ दो ।
३३. अमानत में खयानत करना छोड़ दो ।
३४. अति परिचय करना छोड़ दो ।
३५. परायी वस्तु को सांप समझकर छोड़ दो ।
३६. माप–तौल में ठगना छोड़ दो ।

१. यदि तुम चाहते हो कि विपत्ति में कोई मेरी सहायता करे तो तुम विपत्ति में किसी की सहायता करो ।

२. यदि तुम चाहते हो कि कोई मेरी चोरी न करे तो तुम किसी चोरी न करो ।

३. यदि तुम चाहते हो कि मुझ से कोई धोखा न करे तो तुम भी कि को धोखा न दो ।

४. यदि तुम चाहते हो कि मेरा अपमान कोई न करे तो तुम भी कि को अपमान न करो ।

५. यदि तुम चाहते हो कि मेरे पुत्र मेरी सेवा करें तो तुम भी माता-पि की सेवा करो ।

६. यदि तुम चाहते हो कि मेरी बुराई कोई न करे तो तुम भी किसी की बुराई न करो ।

७. यदि तुम सुख-आराम से रहना चाहते हो तो दूसरों को भी सुख-आराम से रहने दो ।

८. यदि अन्न, धन, वस्त्र आदि का दान करने की शक्ति नहीं है तो मन से सब जीवों का शुभ चिन्तन करो ।

६. यदि किसी को सुख पहुंचा नहीं सकते हो तो किसी को पीड़ा मत पहुंचाओ ।

०. यदि आत्मा का दर्शन चाहते हो तो ऐसे सन्त एवं गुरु के पास जाओ जिसके मन रूपी आंखों पर दस नम्बर का चश्मा चढ़ा हुआ हो ।

१. यदि तुम चाहते हो कि संसार के बन्धन अनायास ही कट जायें तो किसी निर्बन्ध की शरण में जाओ ।

२. तामस ज्ञान वाले तामसी रस्सियों से, राजस ज्ञान वाले राजसी रस्सियों से एवं सात्विक ज्ञान वाले सात्विक रस्सियों से बन्धे रहते हैं ।

३. तामस ज्ञान वाले तामसी अत्याचार राजस ज्ञान वाले राजसी अत्याचार एवं सात्विक ज्ञान वाले सात्विक अत्याचार करते हैं ।

४. देव स्थानों (मन्दिरों) नदियों एवं सागर की जमीन अथवा सम्पत्ति को जिस किसी प्रकार हड़प करने वाले दूसरे जन्म में परिवार सहित नीच योनि में जन्म लेते हैं ।

५. जो कोई भी जीते जी माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त नहीं करता उसे सन्त, गुरु एवं भगवान का आशीर्वाद नहीं मिलेगा ।

६. जो स्त्री अपने पति की आज्ञा नहीं मानती एवं प्रतिकूल आचरण करती है वह दूसरे जन्म में जवानी में विधवा हो जाती है ।

१७. जो मनुष्य अपनी पत्नी (स्त्री) का पालन-पोषण नहीं करता
अपमान करता है वह भी दूसरे जन्म में स्त्री होकर जवानी में
हो जाता है।

१८. असाध्य रोग एवं दरिद्रता आदि विपत्तियां, अत्याचार के फल है

१९. जो गुरु अपने शिष्यों से जितनी सेवा-पूजा, सम्मान सत्कार च
उससे सौ गुणा अधिक यदि वह अपने गुरु की सेवा-पूजा आ
करता तो ऐसे गुरु को दूर से ही त्याग देना चाहिये।

२०. जो गुरु परीक्षा लिये बिना किसी को अपना शिष्य बनाता है
मनुष्य परीक्षा लिये बिना किसी को अपना गुरु बनाता है तो
मरने के बाद पिशाच (भूत-प्रेत) होते हैं।

२१. जिस किसी के मन में यह बात बैठ गयी कि अमुक व्यक्ति बहुत
गाता बजाता है, अच्छा सत्संग करता है, वह मनुष्य अपनी ल
कभी नहीं पहुंच सकता।

२२. गुरु, सद्गुरु, जगत्गुरु, विश्वगुरु और राजा-महाराजा भी यदि
मांगते फिरेंगे तो जन-साधारण की क्या दशा होगी ?

२३. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो नारायणा
राम रामाय नमः, जय राधे, जय सीताराम, जय श्री कृष्ण, स
साक्षी, राम, श्याम, गोविन्द, हरि, माधव, सोऽहम्, शिवोऽहम्, ज
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण
हरे हरे, और गायत्री आदि कई मन्त्र हैं, जितने भगवान् के नाम
सब मन्त्र हैं। इन सब मन्त्रों में किसी में दो किसी में चार, कि
पांच किसी में दस, किसी में बारह तो किसी में सोलह अक्षर हैं
क्या कोई निश्चय से बता सकता है कि इन मन्त्रों में कौन सा बड़ा
कौन सा छोटा है ? कौन सा अच्छा है ? कौन सा बुरा है ? ज
बात को ठीक ठीक नहीं जानता उसे सही रास्ता कभी नहीं मि
चाहे वह लाख गुरु क्यों न करे।

२४. यदि चाहते हो कि होनी अनहोनी होनी में बदल जाये तो एक निश्चय से एक ही गुरु का मन्त्र जप करो, मूर्ति का ध्यान एवं प्रार्थना करो।

२५. सोच समझ कर गुरु करना कोई बुरा नहीं है पर बार बार गुरु बदलना, गुरु का नाम छिपा लेना या दूसरे गुरु का शिष्य कहलाना, ऐसा कोई नीच कर्म नहीं है।

२६. जैसे बालक का प्रेम माता में होता है, वैसे भक्त का भगवान में और शिष्य का गुरु में जब तक प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ है तब तक सफलता नहीं मिलेगी।

२७. जप प्रार्थना एवं नमस्कार सफलता की चाबी है।

२८. जहां खड़े हो वहां से ही बिल्कुल सीधे बताये गये रास्ते पर चलना आरम्भ कर दो, एक न एक दिन अवश्य लक्ष्य पर पहुंच जाओगे, यदि जरा सा भी इधर उधर मुड़ोगे, झांकोगे या पूछ-ताछ करोगे तो सब गंवा दोगे।

२९. भगवान या गुरु किसी की सेवा-पूजा या सुख-दुःख को नहीं देखते पर स्नेह और श्रद्धा को देखते हैं।

३०. कोई भी मीठा एवं मधुर बोलता है तो इसका यह मतलब नहीं है कि उसका मन भी मीठा-मधुर होगा।

३१. ज्ञान को समझने की कोशिश करो, अज्ञान को भी समझने की कोशिश करो, क्योंकि अज्ञान, अन्धकार में गिराता है और ज्ञान उससे भी अधिक घोर अन्धकार में ले जाता है।

३२. जो गुरु अपने गुरु की आज्ञा के अनुसार इष्ट की पूजा करता है, या दूसरों से करवाता है, वह उत्तम गुरु है जो गुरु अपने मन पसन्द इष्ट की पूजा के लिए, अपने गुरु से आज्ञा लेकर पूजा करवाता है, वह मध्यम गुरु है, जो गुरु अपने गुरु की आज्ञा बिना अपनी इच्छा के अनुसार इष्ट की पूजा करता है ना करवाता है, वह कनिष्ठ गुरु है।

३३. सद्गुरु, देवों और सन्तों की सेवा-पूजा से भी सौ बार अधिक जो न
अपने पतिदेव की सेवा-पूजा करती है, वह पतिव्रता नारी है।

३४. जो शरीर के आसन सिखाता है वह साधारण गुरु है, जो मन के आ
सिखाता है वह उत्तम (असाधारण) गुरु है।

३५. जिस शिष्य को भगवान और सन्तों से भी बढ़कर अपने गुरु में स
श्रद्धा और भावना है, उसे ही सफलता मिलेगी।

३६. सूर्य दूर है या अग्नि? भगवान दूर है या गुरु? यह एक पहेली
जिसमें परमात्मा छिपा हुआ है।

३७. जो मनुष्य, अपने बाल-बच्चों, माता पिता और बड़ों का पालन-पोष
और सेवा-पूजा निष्कपट एवं नि:स्वार्थ भाव से अपना कर्त्तव्य
समझकर कष्टों को सहता हुआ भी करता रहता है वह मनुष्य, भगव
एवं गुरु का सच्चा भक्त है।

३८. जो कुछ जानते हो अथवा समझते हो, बस वह ही बहुत है, वि
जानने या समझने की जरूरत नहीं है, केवल उस पर चलो, अ
विचारों पर चलोगे तो सुख मिलेगा, बुरे विचारों पर चलोगे तो दु
मिलेगा।

३९. तमे गुणी, रजे गुणी तो क्या पर सते गुणी लोग भी "ब्रह्म क्या है"
उत्तम ज्ञान को नही समझ सकते। जो लोग स्वयं नहीं समझ सकते
दूसरो को क्या समझा सकते हैं।

४०. रजे गुण तमे गुण एवं सते गुण बिल्कुल निराला शुद्ध सत्य
बताया गया है, हमें शुद्ध सत्व गुणी लोगों को बुद्धि और शास्त्रो द्व
खोजना चाहिये।

४१. तमे गुणी, रजे गुणी और सते गुणी लोंग एक दूसरे से अधिक परि
व मोह माया में फंसे हुए हैं।

४२. तमे गुणी, रजेगुणी और सते गुणी लोग एक दूसरे से अधिक पर-नारियों के साथ हंसी मजाक करते हैं, और उन्हें हाथ लगाते, गले लगाते हैं, बुद्धिमान लोगों को चाहिए कि ऐसे लोगों से सदा दूर रहें, दूसरों को भी सावधान करें।

४३. पिता और भाई दोनों अपनी नौजवान लड़की या बहिन को न तो छूते हैं न गले लगाते हैं। देखा जाय तो पिता व भाई की भावनाएं शुद्ध एवं पवित्र होती है। शुद्ध सते गुणी लोग भी पर नारियों को, माता, बहिन व पुत्री समझ कर न हाथ लगाते है न गले लगाते हैं। ऐसे लोगों को ही गुरु या सन्त कहते हैं।

४४. जिन की विद्या, कर्म और कुल शुद्ध-पवित्र हैं उन को ही सन्त और गुरु कहते हैं।

४५. अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन, पोरचोगेज, इटालियन, थाई, मलाई, चीनी, बंगला, तामिल, सिन्धी, पंजाबी, गुजराती, संस्कृत इत्यादि कई भाषाएं दुनिया भर में बोली जाती हैं। पर किसी भी भाषा के द्वारा ब्रह्मज्ञान नहीं समझा जा सकता है। अंग्रेजी या संस्कृत या अन्य भाषाओं का पूर्ण ज्ञान रखने वाला ही ब्रह्मज्ञान समझ सकता है या ब्रह्मज्ञानी हो सकता है, ऐसा समझना बड़ी भूल है, अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

४६. जब तक अपनी चाहना पैदा न हो तब तक भूल कर भी गुरु नहीं करना चाहिये, किसी के कहने या बहकाने पर या दूसरों को देख कर गुरु नहीं करना चाहिये।

४७. जिस का मन चचल है, जिस का दृढ़ संकल्प नहीं है, जो दूसरों की मति (राय) पर चलता है, जो सत्य नहीं बोलता है, ऐसे मनुष्य से सदा दूर रहना चाहिये। चाहे सन्त, गुरु ही क्यों न हो।

४८. ज्ञानी लोग अज्ञानियों को ठगते हैं, अज्ञानी लोग फिर ज्ञानियों को ठगते हैं, जो कोई भी ज्ञानियों और अज्ञानियों से अपने आप को बचायेगा,

वही ब्रह्म ज्ञान को समझ सकेगा, उसे ही लोक और परलोक के सुख
अत्यन्त निराले सुख का अनुभव होगा।

४६. दुखों से छूटने और सुखों को बढ़ाने के लिए प्रत्येक मनुष्य कोशिश क
है, पर सुखों से छूटने के लिए कोई विरला ही कोशिश करता है।

५०. सच तो यह है कि गुरु भी तब करना चाहिये जब सुखों से छुटक
पाने की इच्छा मन में पैदा हो।

५१. रजे गुणी और तमे गुणी इच्छाएं तो वैसे ही खराब है पर, सतेगु
इच्छाएं तो और भी खराब हैं। इसलिये तीनों प्रकार की इच्छाओं
त्याग कर शुद्ध सतेगुणी इच्छाएं करनी चाहिए।

५२. जो कोई मनुष्य दुनिया के पदार्थों को देख सुन और पढ़ कर
हकीकत की खोज करता हैं, वह ही मनुष्य है। अगर मनुष्य हो तो स
की खोज करो।

५३. ऐसे भी सन्त और गुरु है जो कहते हैं कि मांस मछली खाना पाप
है, एकादशी, पूर्णिमा इत्यादि बड़े दिनों पर भी खाने से पाप
लगता, ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जिनका कहना है कि मांस मछ
खाना वैसे ही पाप है परन्तु पर्व के दिनों में खाना महा पाप है, अ
मनुष्य हो तो सत्य की खोज करो।

५४. ऐसे भी सन्त और गुरु हैं, जो कहते हैं कि मूर्ति पूजा मत करो, ऐसे
सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि मूर्ति पूजा जरूर करो, अगर मनु
हो तो सत्य की खोज करो।

५५. ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि पत्नी पति को नमस्कार
और फिर पति पत्नी को नमस्कार करे, क्योंकि सब ब्रह्म है। ऐसे
सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि पति को नमस्कार करना पत्नी
धर्म है, पर पत्नी को नमस्कार करना सबसे बड़ा अधर्म है, अगर मनु
हैं तो सत्य की खोज करो।

६. ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि ज्ञान के सिवा मुक्ति नहीं मिल सकती, ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि कर्म के सिवा मुक्ति नहीं मिलेगी, अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

७. ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते है कि अस्पतालों, विद्यालयों, धर्मशालाओं, नारी शालाओं, वृद्धाश्रमों, गरीबों, की सहायता इत्यादि के लिए चंदा करके धन जुटाना चाहिये, ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि चंदा नहीं करना चाहिये पर अपनी सत्य की कमाई से जहां तक हो सके, सहायता करनी चाहिये। अगर मनुष्य हो तो सत्य की खोज करो।

८. ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि पुराण नहीं पढ़ने चाहिये, ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि पुराण जरूर पढ़ने चाहिये, अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

६. ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि आकाश ही ब्रह्म है, ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि आकाश ब्रह्म नहीं है, पर ब्रह्म का शरीर हैं और पांच तत्वों में से एक तत्व है अगर मनुष्य हो तो सत्य की खोज करो।

०. ऐसे भी गुरु और सन्त हैं जो कहते हैं कि लोगों को बुलाकर भी शिष्य बनाना चाहिये। ऐसे भी सन्त और गुरु हैं जो कहते हैं कि जो कोई अपने आप शिष्य बनने के लिये आये तो उसकी भी परीक्षा लेकर फिर शिष्य बनाना चाहिये, अगर मनुष्य हो तो सत्य की खोज करो।

१. कई बच्चों के गुरु, कई लड़कियों के गुरु, कई महिलाओं के गुरु, कई पुरुषों के गुरु, कई सूरदासों के गुरु, कई बुद्धिमानों के गुरु, कई मूर्खों के गुरु, कई धनवानों और राजाओं के गुरु, कई लोभियों के गुरु, कई तन के गुरु, कई मन के गुरु, कई गुरुओं के गुरु, हक़ीकत में गुरु किसे कहते हैं ? अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

६२. कई सन्त और गुरु कर्म को उत्तम बतलाते हैं, कई सन्त उपास उत्तम बतलाते हैं, तो कई ज्ञान को सबसे उत्तम बतलाते हैं, मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

६३. सत्संग तो कई जगहों पर होते रहते हैं, किसी सत्संग में थोड़े ल किसी सत्संग में बहुत लोग, किसी सत्संग में सीधे-सादे गरीब लोग तो किसी सत्संग में पढ़े-लिखे धनवान और विदेशी लोग, अ बता सकता है कि कौनसा सत्संग अच्छा ? जहां थोड़े व सीधे भोले-भाले लोग हों वह सत्संग अच्छा या जहां पढ़े लिखे, ध देशी-विदेशी और हजारों लोग हों वह सत्संग अच्छा ? अगर मनु तो सत्य की खोज करो।

६४. पिता अपनी लड़की का सम्बन्ध जोड़ने के लिये तब तक वर-घ खोज करता है जब तक उसे कोई अच्छा-योग्य वर-घर न मिला है घर मिल जाने पर तलाश करना छोड़ देता है. वैसे वर घर तो है, पर लड़की का पिता दूसरे घरों की खोज नहीं करता। ऐ जिज्ञासु को भी पूर्ण शिष्य बनकर उत्तम एवं पूर्ण गुरु के लिये समाज में तब तक खोज करनी चाहिये जब तक कि उसे पूर्ण मिला हैं। अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

६५. भगवान बड़ा है या सन्त बड़े हैं या गुरु बड़ा है ? अगर मनुष्य सत्य की खोज करो।

६६. कभी ऐसा मत समझना कि मैं ही धनवान हूं, मैं ही विद्वान हूं, चतुर-चालाक हूं मैं ही उत्तम ऊँचे कुल का हूं, मैं ही नीतियों का ज वाला हूं, मैं ही बलवान हूं, शास्त्रज्ञ हूं' मैं ही सुखी हूं, मैं ही स्वस मैं ही रोगी हूं, मैं ही दुःखी हूं, पर सदा यह याद रखें कि तुम से बात में बहुत कुछ अधिक (आगे) लोग इस दुनिया में पड़े है, असलियत को समझ गये तो ब्रह्म ज्ञान प्राप्ति के योग्य बन जा नहीं तो भटक जाओगे, मंजिल (लक्ष्य) बहुत दूर है, अगर मनु तो सत्य की खोज करो।

६७. बाहर की वेश-भूषा बदलने से चालढाल बदलने से या बोलचाल बदलने से मन नहीं बदल सकता, तब मन कैसे बदल सकता है ? अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो ।

६८. विद्वान-बुद्धिमान लोग परिचित या अपरिचित साधु सन्तों के कर्मों की पूरी जांच करने के बाद ही किसी को गुरु करते हैं, अज्ञानी और दूसरों के कहने पर चलने वाले लोग साधु-सन्तों के बाहरी वेश–भूषा, रंग-ढंग, लबारों (गप्प मारना) हंसी मजाक को देख कर गुरु करते हैं, अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो ।

६९. बुढ़ापा क्या होता है । बीमारी, कमजोरी, गम, (शोक) गरीबी और गुलामी क्या होती हैं । यह जानकारी तब होगी जब जवानी का जोश, धन का नशा, पद का अहंकार, कुरसी की करामात (चमत्कार) गद्दी का गर्व, विद्या, कला और ज्ञान का घमण्ड समाप्त होगा । अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो ।

७०. ब्रह्म परमात्मा (जो न सूक्ष्म है न स्थूल है, न छोटा है न बड़ा है, न अन्धकार है न प्रकाश है, न दूर है न समीप है) का साक्षात् दर्शन तब होगा जब गुरु एवं शिष्य दोनों पूर्ण योग्य होंगे । अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो ।

७१. जितना अधिक ज्ञान उतनी अधिक इच्छाएं, जितनी अधिक इच्छाएं उतना अधिक मन चंचल, जितना अधिक मन चंचल उतने अधिक दुख और विपत्तियां, अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो ।

७२. रोगी ठीक होगा या नहीं ! कोई भी वैद्य तसल्ली (पक्का भरोसा) नहीं दे सकता । पर रोग न ठीक होने की दशा में वैद्य बदला जा सकता है, पर किसी भी हालत में गुरु नहीं बदला जा सकता । जो कोई भी गुरु बदलता है तो वह सौ जन्म कुत्ते के लेता है और बाद में चाण्डाल होता

है, वैद्य और गुरु में रात दिन का अन्तर है, अगर मनुष्य हैं तो स
की खोज करो।

७३. ब्रह्मज्ञानी न सोता है न जागता है, न बैठता है न चलता है, न देखता
न दिखाता है, न सुनता है न सुनाता है, न खाता है न पीता है, न ग
है न बोलता है, न आता है न जाता है। तब क्या करता है? अ
मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

७४. दुनिया में कोई भी नास्तिक नहीं है, सब आस्तिक हैं अगर मनुष्य हैं
सत्य की खोज करो।

७५. समाधि अथवा ध्यान अवस्था में न कोई गिरता है, न बेहोश होता
अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

७६. पूर्ण ब्रह्मज्ञानी (सब शक्ति रखते हुए भी) साधारण मनुष्य की तर
दिखता है वह जन साधारण को आश्चर्य में डालने वाला ऐसा को
भी कर्म नहीं करेगा। अपनी बड़ाई न स्वयं करता है न दूसरों
करवाता है, अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

७७. ब्रह्म या आत्मा के लिये वेदों व गीता के वचन बार बार दोहराए जा
हैं कि आत्मा को आग जला नहीं सकती, शस्त्र काट नहीं सकता, हव
न उड़ा सकती है न सुखा सकती है, पानी न डुबा सकता है न गील
कर सकता है, आत्मा अजर, अमर, अनन्त, अखण्ड, अविनाशी, अजन्मा
निराकार, और निर्विकार है, पर देखा जाय तो यह साधारण ज्ञान है
मैं ही ब्रह्म हूं, मैं ही आत्मा हूं, तुम ही ब्रह्म हो तुम ही आत्मा हो यह
तो और भी साधारण ज्ञान है। केवल जन साधारण को फसाने औ
बच्चों को रिझाने का ज्ञान है, सच्चा ब्रह्मज्ञान या आत्मज्ञान बिल्कुल
निराला है, अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

८. गाड़ी दिल्ली स्टेशन से रवाना होकर बाम्बे स्टेशन पर पहुंचती है तो
पहले कौनसी श्रेणी वाला डिब्बा स्टेशन पर पहुंचेगा? ऐसा भी होता

है क्या कि प्रथम श्रेणी का डिब्बा पहले पहुंचता है और तीसरे दर्जे का या और दूसरे डिब्बे दो चार घण्टे देर से पहुंचते हैं। चाहे प्रथम श्रेणी का डिब्बा हो चाहे दूसरे तीसरे दर्जे के डिब्बे क्यों न हों पर सब डिब्बे एक ही समय स्टेशन पर पहुंचते हैं। वेदों को भी एक गाड़ी समझो, जिस में कर्म, उपासना और ज्ञान तीन प्रकार के डिब्बे जुड़े हैं। वेदरूपी गाड़ी भी बिल्कुल एक समय पर ब्रह्मलोक स्टेशन पर पहुंचेगी। न तो ज्ञान रूपी डिब्बा पहले पहुंचेगा न कर्म और न उपासना रूपी डिब्बे देर से पहुचेंगे। जिस किसी डिब्बे में जो कोई चढ़ेगा वह ही पहुंचेगा। जो देखता रहेगा या डिब्बा बदलता रहेगा या बातों में लगा रहेगा वह तो रह ही जायेगा। अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

७९. जिस मनुष्य को दुख-सुख, मान-अपमान, यश-अपयश इत्यादि को सहन करने की शक्ति नहीं है. न तो ज्ञान शक्ति न वैराग्य शक्ति (अपने आप को समझाने की शक्ति) है, उस मनुष्य को मुफ्त (भिक्षा) का भोजन नहीं खाना चाहिये, दान का पैसा नहीं लेना चाहिये, और गेरुए वस्त्र भी नहीं पहनने चाहिये। अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

८०. जो मनुष्य बहुत अच्छे ऊंचे कपड़ों धन-सम्पत्ति. बहुत स्वादिष्ट भोजनों, फलों के मीठे रसों निवास के लिये ऊंचे महल अटारियों और लोगों द्वारा आदर, सत्कार, सम्मान पा कर बहुत प्रसन्न होता है फूला नहीं समाता है और यह समझता है कि सत्संग करने का फल, सन्तों के साथ रहने का फल, सन्तों की सेवा का फल और शास्त्रों के पढ़ने सत्संग करने का फल यही है तो उसको साधु सन्त या गुरु नहीं समझना चाहिये, पर उस को एक व्यापारी समझना चाहिये, अगर मनुष्य हैं तो सत्य की खोज करो।

८१. पिता के स्वर्गवास होने के पश्चात् पुत्र को, पति के स्वर्गवास होने के पश्चात् पत्नी को और गुरु के स्वर्गवास होने के पश्चात् शिष्य को कभी भी मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करना चाहिये।

८२. गुरुदेव जी विदेश में हों अथवा ब्रह्मलीन हो गये हों, ऐसी स्थिति में कोई शिष्य अपने गुरु की मूर्ति को ही साक्षात समझकर सेवा पूजा कर है, उसको ही ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होगी।

८३. जो कोई गुरु या सन्त शिष्यों अथवा जिज्ञासुओं को डरा धमका कर लोभ दे कर उन्हें बुरे कर्म करने या करवाने के लिये मजबूर करता वह न गुरु है न सन्त है, बुद्धिमान लोगों को चाहिये कि ऐसे गुरु ए सन्तों से अपने आपको बचायें और दूसरों को भी बचायें।

८४. ऐसे भी शिष्य एवं जिज्ञासु हैं जो गुरु एवं सन्तों की सम्पत्ति को ताक रहते हैं ऐसे भी गुरु एवं सन्त हैं जो फिर शिष्यों एवं जिज्ञासुओं क सम्पत्ति को ताकते रहते हैं, बुद्धिमान लोगों को चाहिये कि ऐसे लोग से अपने आपको बचायें और दूसरों को भी बचायें।

८५. गुरु बदलना महापाप है, परन्तु जो गुरु किसी को जबरदस्ती मजबू कर धोखे से शिष्य बनाता है तो ऐसे गुरु के छोड़ने में पाप नहीं हैं, प महान पुण्य है।

८६. जिस किसी का गुरु और भगवान में पक्का विश्वास है, वह ही संसा सागर से स्वयं भी तरेगा और दूसरों को भी तारेगा। परन्तु जिसक माया और माया में फंसे लोगों में विश्वास है वह स्वयं तो डूबेगा हि पर दूसरों को भी डुबोयेगा।

८७. माताओं, बहनों, धनवानों और जन साधारण को रिझाना बहुत सरल (आसान) है, पर सद्गुरु और भगवान को रिझाना बहुत कठिन है।

८८. चाहे दिन में दस बार सत्संग करो या सुनों, पर सच्चा सुख तब ही प्राप्त होगा जब मर्यादाओं का पूरा पालन किया जायेगा।

८९. जन्म से लेकर मरण पर्यन्त प्रत्येक मनुष्य को सुखों एवं दुखों का पूर अनुभव है, पर सच्चा सुख और सच्चा दुख क्या होता है, ऐसा ज्ञान तब होगा जब मर्यादाओं का पूरा पालन किया जायेगा।

आत्मा, परमात्मा, ईश्वर और ब्रह्म, सर्व व्यापक हैं. देखने में तब आयेगा जब मर्यादाओं का पूरा पालन किया जायेगा मर्यादा किसे कहते हैं, जानकारी के लिये इतिहास, पुराण, गीता, और रामायण को ध्यान से पढ़ो ।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी
महाराज की
* आरती *

ओ३म् जय गुरु टेऊंराम, स्वामी जय गुरु टेऊंराम ।
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम ।।ॐ।।
जब जब प्रेमिनि निज हित कारण, तुमको पूकारा ।।स्वामी।।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सब को निस्तारा ।।ॐ।।
प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मन्त्र साक्षी सतनाम ।।स्वामी।।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ।।ॐ।।
देश विदेश में मंडली लेकर, पावन दे उपदेश ।।स्वामी।।
आत्म रूप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश ।।ॐ।।
पूरण अचल समाधी तेरी, सिद्ध आसन ब्राजे ।।स्वामी।।
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन गाजे ।।ॐ।।
आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रिय यती ।।स्वामी।।
परम उदारी धैर्य धारी, परम अगाध मती ।।ॐ।।
धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साधु सुजान ।।स्वामी।।
धन वह देश जहां तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान ।।ॐ।।
सुर नर मुनिजन हरिजन गुनिजन, गावत गुन तुम्हरे ।।स्वामी।।
अन्त न पाइ सके नर कोई, महिमा अपर परे ।।ॐ।।
जो जन तुम्हरी आरती गावे, पावे सो मुक्ती ।।स्वामी।।
साध संगति को हरदम दीजे, पूर्ण गुरु भक्ती ।।ॐ।।

सद्गुरु स्वामी सर्वानंदजी

महाराज की

❀ आरती ❀

ॐ जय गुरु सर्वानन्द, स्वामी जय गुरु सर्वानन्द ।
धर्म कर्म का दे उपदेशा, काटे यम के फन्द ।।ॐजय।।
तुम हो दाता दीन दयालू, सब के हितकारी ।।स्वामी।।
शेष शारदा नित गुण गावे, महिमा अति भारी ।।ॐजय।।
तन पर चोला गेरू रंग का, सिर पे जटाधारी ।।स्वामी।।
कर कमलों में लाठी सोहे, मोहे नर नारी ।।ॐजय।।
अपने गुरु के निज वचनों को, घर घर पहुंचाया ।।स्वामी।।
भूले भटके दीन जनों को, सत् मार्ग लाया ।।ॐजय।।
अधम उद्धारन कष्ट निवारन, भक्तन भयहारी ।।स्वामी।।
भव जल तारन पार उतारन, कारन देह धारी ।।ॐजय।।
देश विदेश में भ्रमण करके, भक्ती फैलाई ।।स्वामी।।
सोहम् शब्द का मन्त्र दे वह, ज्योती दिखलाई ।।ॐजय।।
अजर अमर और अज अविनाशी, घट घट के ज्ञाता ।।स्वामी।।
कण कण में तुम सर्व व्यापक, पूर्ण गुरु दाता ।।ॐजय।।
परम उदारी पर उपकारी, अमरापुर वासी ।।स्वामी।।
शरण तुम्हारी जो जन आवे, पावे सुख रासी ।।ॐजय।।
टेऊँराम के कृपा पात्र, तुम हो भक्ती भण्डार ।।स्वामी।।
गुरु भक्त बन गुरु भक्ती का, खूब करा प्रचार ।।ॐजय।।
पूर्ण गुरु की पूरी आरती, जो जो नर गावे ।।स्वामी।।
पाप ताप सन्ताप मिटा कर, पूर्ण पद पावे ।।ॐजय।।

छन्द—सर्वं स्वरूपं आदि अनूपं, भूमि भूपं भयभाना ।
अन्त न ऊपं छाय न धूपं, काढत कूपं धर ध्याना ।।
रहस्यारामं दायक धामं, नितनिष्कामं निर्वानी ।
पाद नमामं निशिदिन शामं, श्री टेऊँराम गुरुज्ञानी ।।१।।
चावल चन्दन कुंगू कैसर, फूलों की बरखा बरसाओ ।
नृसिंह गोमुख भेरी बाजा, तबला सुरन्दा झांझ बजाओ ।।
भर भर दीपक पूर्ण घी से, अगरबत्ती अरु धूप जलाओ ।
आरती साज करो बहु सुन्दर, सद्गुरु की जयकार बुलाओ ।।२।।

* प्रार्थना *

आशवन्दी गुरु तो दर आई, तो बिन ठौर न काई ।
तुम हरि दाता तुम हरि माता, मेरी आश पुजाईं ।।
पाइ पलउ मैं पेर प्यादी, आयसि हेत मंझाईं ।
तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नाम सनेही ।।
नाम तुम्हारा साबुन कर मैं, धोसां पाप सभेई ।
कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाईं ।।

* पलउ *

पलउ जे पाईन दाता तुंहिंजे दर ते,
दाता दर आयनि जा, अर्ज ओनाईं ।
मिड़ई तिनि जे तन मन जा, दुखड़ा मिटाईं ।
आसूं अघाईं, 'आसू', आस वन्दनि जूं ।।१।।
जो जन आ गुरु शरण में, बैठ करे अर्दास ।
कहे टेऊं तिस दास की, पूरन करिये आस ।
दूख सर्व ही दूर हो, लगे न यम की त्रास ।
कारज होवन रास, संशय कोई ना रहे ।।२।।

श्लोक :— अभय मित्रादभयमित्रा,
दभयं ज्ञातादभयं पुरोयः ।
अभयं नक्तमभयं पुरोयः दिवा
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।

अर्थ :—हम मित्र से अभय हों, शत्रु से अभय हों, ज्ञाता
(परिचित और अपरिचित) दोनों से अभय प्राप्त हों र
अभय प्रद हो, समस्त दिशाएं मेरी मित्र हो । (अथर्ववेद)

मंगल मूर्ति सद्गुरु टेऊँ राम जी महाराज क
मंगल मूर्ति सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज की
मंगल मूर्ति स्वामी गुरुमुख दासजी महाराज क

धर्म की जय हो । अधर्म का नाश हो ।
प्राणियों में सत् भावना हो । विश्व का कल्याण हो ।
प्रेम का प्रकाश हो ।
।। हर हर महादेव ।।

श्री सत्नाम साक्षी

श्री प्रेमप्रकाश मण्डल की प्रकाशित पुस्तक

1. श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ
2. जीवन चरित्र (स्वामी टेऊँराम)
3. जीवन चरित्र (स्वामी सर्वानन्द)
4. अमरापुर वाणी
5. ब्रह्म दर्शनी
6. कवितावली - छन्दावली
7. श्री प्रेम प्रकाश दोहावली
8. अमरकथा
9. चूड़ाला - शिखर ध्वज
10. यमराज - नचिकेता
11. वामन - बलि
12. भजन फुलवाड़ी
13. नित्य नियम प्रार्थना
14. साक्षी - दर्शन
15. अमरापुर दर्शन
16. गुरुमुख भजनमाला
17. गुरुमुख दोहावली
18. स्वामी टेऊँराम महिमा भजन
19. सर्वानन्द सन्देश
20. शिक्षा - पत्र

प्राप्ति स्थान
अमरापुर स्थान, जयपुर 3020

मुद्रक : विजय आर्ट प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर